8 अगस्त, 2014

भारत-कज़ाकस्तान: नई सहक्रिया की तलाश

*डा. अतहर जफ़र**

कज़ाकस्तान अपने प्राकृतिक संसाधनों तथा भौगोलिक लाभप्रद स्थि तिका प्रभावी ढ़ंग से दोहन करके मध्यय एशिया के विकसित होते क्षेत्रीय राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्यदमें एक प्रमुख ताकतवर देश के रूप में उभरा है। यह देश अब एक क्षेत्रीय आर्थिक ताकत एवं प्रमुख निर्यातक देश है और यह उभरते एशिया और यूरोप के बीच व्याव्हारिक और सांस्कृतिक सेतु बन गया है। स्व तंत्रता प्राप्ति के बाद से ही कज़ाकस्तान भारत के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता देता आ रहा है। उदाहरण के लिए, वर्ष 1992 में वहां के राष्ट्रपति नूरसुल्तान नजरबायेव द्वारा स्वतंत्र राष्ट्रों के राष्ट्रमंडल (सीआईएस) से बाहर के दौरे के लिए प्रथम गंतव्य् के रूप में नई दिल्ली को चुना गया था। नई दिल्ली और अस्ताना ने द्विपक्षीय तथा क्षेत्रीय दोनों ही स्तरों पर आर्थिक, सुरक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपने संपर्क बढ़ाए हैं। पिछले दो दशकों के दौरान , दोनों देशों के बीच संपर्क घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों से बढ़ते हुए वर्ष 2009 में रणनीतिक भागीदारी तक आ पहुंचे हैं। कज़ाकस्तान मध्य एशिया में वह पहला देश है, जिसके साथ भारत ने इस भागीदारी करार पर हस्ताक्षर किया है।

हाइड्रोकार्बन भारत और कज़ाकस्तान के बीच के द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्व् पूर्ण घटक है। दोनों देशों की राष्ट्रीय तेल कंपनियां, भारत की ओ.एन.जी.सी. विदेश लिमिटेड (ओ वी एल) और कज़ाकस्तान की कज़मुनाईगैस, कज़ाकस्तान की सत्पैइएव तेल अन्वेषण परियोजना पर काम कर रही हैं। तथापि , भारत की अनदेखी करके कोनोकोफिलिप के शेयर चीन को बेचने का कज़ाकस्तान का हाल का निर्णय, ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में भारत और कज़ाकस्तान के बीच बढ़ते संपर्क के लिए एक धक्कापथा। ओ वी एल ने काशागान तेल क्षेत्र में 5 बिलियन अमरीकी डॉलर मूल्यढके बराबर का, अमरीकी कंपनी कोनोकोफिलिप का 8.4 प्रतिशत शेयर

खरीदने का लक्ष्य रखा था और यह सौदा लगभग तय हो गया था लेकिन कज़ाकस्तान की सरकार ने कोनोकोफिलिप से शेयर खरीदने के अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए हस्तक्षेप किया और वर्ष 2013 में चीनी राष्ट्रपति जि जिनपिंग की कज़ाकस्तान यात्रा के दौरान इसे चीन के राष्ट्रीय पेट्रोलियम निगम को बेच दिया।

तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि अस्ताना ने महसूस किया है कि भारत के साथ संबंध की कीमत पर चीन का तुष्टिकरण इसके ऊर्जा क्षेत्र के लिए शुभ संकेत नहीं होगा। कज़ाकस्तान, विगत में नार्वे की स्टैटऑयल कंपनी द्वारा प्रचालित अपने देश के अपतटीय अबई तेल ब्लॉक में भारतीय ओ वी एल को 25 प्रतिशत हिस्सेदारी का प्रस्ताव करके इस कमी को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। अबई तेल क्षेत्र उत्तरी कैस्पियन सागर में कज़ाकस्तान के तट से 65 कि.मी. दूर है। इसका अनुमानित भंडार 2.8 बिलियन बैरल तेल समतुल्य का है। यह ब्लॉक ओ वी एल के सत्पेइयेव अन्वेषण ब्लॉक के करीब है।

अबई ब्लॉक के प्रस्ताव में कज़ाकस्तान के लिए दो उद्देश्ये प्रतीत होते हैं: प्रथम, भारत (द हिन्दू बिजनेस लाइन) को 'शांत करने' का प्रयास और दूसरा, इसके निर्यात स्थलों में विविधता लाना और बड़ी ऊर्जा को लालायित दक्षिण एशियाई बाजार को लक्ष्य करना। कज़ाकस्तान के प्रमुख तेल बाजार यूरोपीय देश और चीन हैं। अस्ताना इस क्षेत्र में भारत को एक प्रवेश द्वार मानते हुए दक्षिण एशियाई बाजार में प्रवेश करना चाहता है। उत्तर-दक्षिण अक्ष/धुरी के साथ-साथ कज़ाकस्तान से भारत के लिए एक हाइड्रोकार्बन पाइप लाइन का बढ़ता उल्लेख भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

वास्तव में, भारतीय उप-महाद्वीप अपने तेज आर्थिक विकास को जारी रखने के लिए मध्य एशिया के संसाधनों का उपयोग करने की प्रबल इच्छा रखता है। भारत और कज़ाकस्तान के बीच अपेक्षाकृत बेहतर व्यापार संबंध हैं; यह लगभग 426 मिलियन अमरीकी डालर है, जो कि भारत-मध्य एशिया के कुल व्यापार का लगभग आधा है। तथापि, गहरे और घनिष्ठ राजनीतिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक संबंधों को देखते हुए, दोनों देश अपनी आर्थिक क्षमता का इष्ट तम उपयोग पूर्णरूपेण कर पाने में अब तक सक्षम नहीं हो पाए हैं। दक्षिण एशिया और मध्य एशिया की तेजी से विकसित होती इन दो अर्थव्यवस्थाओं की संपूरकताएं सीधे सम्पर्क के अभाव के कारण कुछ हद तक बाधित हुई हैं। कज़ाकस्तान चारो तरफ से भूमि से घेरे में बंधा देश है, जबकि इस क्षेत्र तक भारत की भी स्वतंत्र पहुँच नहीं है। ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के रास्ते मध्य एशिया के साथ स्थलीय संपर्क स्थापित करने हेतु भारत के पास उपलब्ध संचार-व्यवस्था के लिए विशाल पूंजी और अवसंरचना की आवश्यकता है और यह अल्पावधि में व्यवहार्य भी नहीं है।

फिर भी, भारत और चीन के बीच बढ़ते आर्थिक संबंधों ने मध्य एशियाई देशों तक पहुँचने का एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत किया है। उत्तर -पश्चिम चीन की सीमाएं तीन मध्य एशियाई गणतंत्रों कज़ाकस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान से मिलती हैं, और नई दिल्ली चीन के भूभाग से होकर इन तीनों देशों तक पहुंचने के लिए इस मुद्दे पर बीजिंग के साथ चर्चा कर सकता है। चीन और भारत में नेतृत्व परिवर्तन और आर्थिक विकास पर उनके जोर दिए जाने - ब्रिक्सस्सबैंक की स्थापना से यह बात उजागर हो गई है - के कारण भारत-चीन-मध्य एशिया-स्थसल्संपर्क-गलियारे/कॉरीडोर की संभावना और प्रबल हुई है।

कज़ाकस्तान मध्य एशिया और यूरोप के साथ चीन के व्यापार को जोड़ने और बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाता है। अस्ताना ने इन बाजारों तक पहुंचने के लिए चीन को अपने क्षेत्र का प्रयोग करने की अनुमति दी हुई है। इसके बदले में , कज़ाकस्तान भी बीजिंग से आग्रह कर सकता है कि वह उसके भूभाग /क्षेत्र से होकर दक्षिण एशिया और मध्य एशिया के बीच संपर्क और आर्थिक गलियारे के विकास में सहयोग करके इस कार्य को आसान बनाए। दक्षिण एशिया-मध्य एशिया व्यापार गलियारे से दोनों क्षेत्रों के बीच नि वेशों एवं वाणिज्यिक संपर्कों में तेजी आएगी। इससे एक ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक के दक्षिण एशियाई बाजार तक मध्य एशिया की पहुंच हो जाने पर यह भूमि से घेरे में बंधा नहीं रह जाएगा। यह मार्ग ईरानी बंदरगाहों और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण यातायात गलियारे (आईएनएसटीसी) के मार्ग से मध्य एशिया तक भारत के संपर्क के लिए एक विकल्पत्के रूप में उभर सकता है। इससे आईएनएसटीसी अर्थात जहाज से माल को रेल अथवा सड़क नेटवर्कों में शिफ्ट/अंतरित करने की बाधा भी कम हो जाए गी। दोनों क्षेत्रों को और करीब लाने के लिए,बीसीआईएम (बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार) के समान ही एक केकेटीआईसी (कज़ाकस्तान -किर्गिज़स्तान-ताजिकिस्तान-भारत-चीन) मंच पर विचार किया जा सकता है। यदि केकेटीआईसी को मूर्त रूप दे दिया गया तो दक्षिण एशिया-मध्य एशिया कॉरिडोर भी एक वास्तविकता बन जाएगा।

अपने द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ बनाने के अलावा, दोनों देशों के पास उभरती क्षेत्रीय तथा विश्वव्यापी व्येवस्था् को आकार प्रदान करने और इसमें अंशदान करने की क्षमता मौजूद है। भारत के लिए अबई का प्रस्तावि भारत - कज़ाकस्तान द्विपक्षीय संबंधों में एक नए अध्याय के प्रारंभ का सूचक है। कज़ाकस्तान ने भारत के भौगोलिक-आर्थिक महत्व का एहसास किया है और वह नई दि ल्ली को अपने विविध उद्देश्यों को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार मानता है। अस्ताना ने परमाणु प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी,

अंतरिक्ष, फार्मास्यूटिकल्स, परामर्श, मानव संसाधन विकास , पर्यटन आदि जैसे गैर -तेल वाले क्षेत्रों में नई दिल्ली की सहायता प्राप्त् करने में गहरी रूचि दिखलाई है। दूसरी ओर, इस क्षेत्र में सबसे बड़ा देश और सबसे बड़ी क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था होने के कारण कज़ाकिस्तान भारत को इस क्षेत्र में अपने पांव जमाने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जो मध्य एशिया से भारत की संपर्क नीति के अनुरूप भी है। यह भारतीय व्यवसायों के लिए अपने कज़ाकस्तान समकक्षों के साथ अपने संबंध घनिष्ठ बनाने, उनका विस्तार करने और दोनों देशों में व्यवहार्य संयुक्त उद्यम स्थापित करने का उपयुक्त समय है। यह घनिष्ठ सहयोग उन्हें 2015 में यूरेशियाई आर्थिक संघ के उद्घाटन के साथ ही विशाल यूरेशियाई बाजार की क्षमताओं का लाभ उठाने के लिए तैयार करेगा।

* *डॉ. अतहर जफ़र, भारतीय विश्व कार्य परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता।*